मूल्य: ₹ 25/-
ISSN-2231-1002
आपका
तिस्ता-हिमालय
हिन्दी मासिक
वर्ष : 10, अंक : 102, मार्च-2019
लोकतंत्र के आंगन में मल-पिल्लुओं का चुनावी दंगल
और आम आदमी के बुनियादी सवाल !

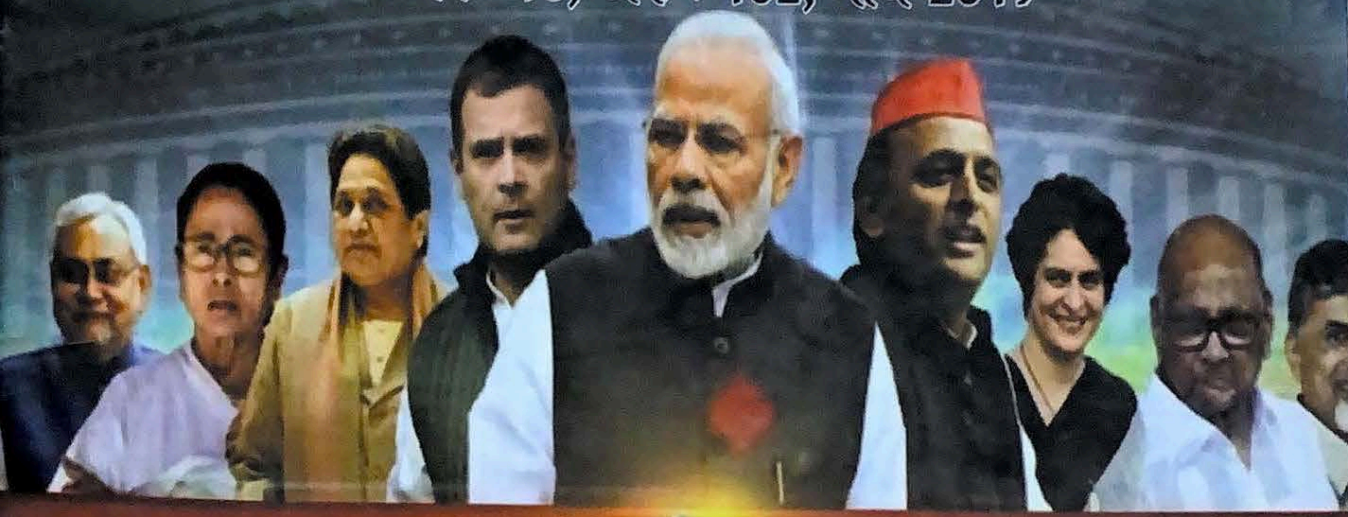

वर्ष: 10, अंक: 102, मार्च-2019

संपादकीय : लोकतंत्र के आंगन में मल-पिल्लुओं का चुनावी दंगल 05

अमरावती सृजन पुरस्कार-2018....08

छद्म राष्ट्रवाद का यह उन्मादी नक़ाब !....11

मारीशस: लघु भारत की प्रदक्षिणा उर्फ हिन्दी का हनीमून....12

ज्ञान की खोज में आजीवन घूमते रहे राहुल सांकृत्यायन....16

नामवर सिंह : आलोचना का गतिप्रज्ञ विमर्श....18

बच्चों का व्यवहार ठीक करने के लिए ज़रूरी है कि पहले बड़े अपना व्यवहार ठीक करें....22

समर्पित प्रेम को प्रदर्शित करती हिंदी लघु फिल्म- दि ब्रिजेज़ ऑफ़ लव....24

कविता : लहू / कील 25

धारावाहिक उपन्यास : जीवन-यात्रा....26

धरती पर जीवन....27

डॉ. सुरेशप्रकाश शुक्ल पर केंद्रित गौरव-ग्रंथ का लोकार्पण एवं सम्मान समारोह....28

(बागडोगरा एयरपोर्ट पर हिन्दी कथाकार शिवमूर्ति का स्वागत करते हुए श्री देवेन्द्रनाथ शुक्ल एवं डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह)

मार्च-2019
मासिक
मूल्य: 25/-(पच्चीस रुपये)

स्वामी/प्रकाशक एवं मुद्रक रंजू सिंह द्वारा मुक्तधारा प्रेस एंड पब्लिकेशन्स के लिए मुक्तधारा प्रेस, अपर रोड, गुरुंगनगर, पो. प्रधाननगर, सिलीगुड़ी-3, जिला दार्जिलिंग (प.बं.) से मुद्रित एवं 'अमरावती' अपर रोड गुरुंगनगर, पो. प्रधाननगर, जिला- दार्जिलिंग (प.बं.) से प्रकाशित, संपादक: डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह
मो: 094340-48163
email : mag.himalayprahari@gmail.com
muktadhara2006@rediffmail.com
Website : www.teestahimalaya.org
RNI No. WBHIN/2010/34186

विज्ञापन विभाग:
ओझा मेंशन, प्रथम तल, हिलकार्ट रोड, सिलीगुड़ी-1, जिला: दार्जिलिंग, प.बं.,
ब्यूरो चीफ : डॉ. डी.आर. नकीपुरिया, 5/6 आईएनएस भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली-1

प्रबंधन: प्रदीप केडिया, सिलीगुड़ी

कानूनी सलाहकार: ओम प्रकाश शर्मा, सिलीगुड़ी / सुदीप कुमार, कोलकाता / राज राजेश्वर सिन्हा, 57-स्कूल रोड, पूर्व पुटीआरी, ग्राउण्ड फ्लोर, कोलकाता-700093

लेखा-निरीक्षक: राज कुमार बिहानी

संपादकीय प्रभारी: शैलेन्द्र चौहान, 34/242, सेक्टर-3, प्रतापनगर, जयपुर-302033, राजस्थान

क्षेत्रीय प्रतिनिधि: शेख मोहम्मद कल्याण, डोडा, जम्मू-कश्मीर
क्षेत्रीय प्रतिनिधि: डॉ. सत्यभामा आडिल, शंकर नगर, छत्तीसगढ़, रायपुर।
क्षेत्रीय प्रतिनिधि: डॉ. मूलचंद गौतम, शक्तिनगर, चंदौसी, मुरादाबाद-202412, उत्तर प्रदेश।
क्षेत्रीय प्रतिनिधि: प्रो. मोहन सपरा, इ.जी.-1083, गोबिन्दगढ़, एसडी कॉलेज रोड, जालंधर, पंजाब।
क्षेत्रीय प्रतिनिधि: सुरेश सेन निशांत, गांव सलाह, डॉ. सुन्दर नगर-1, जिला मण्डी, हिमाचल प्रदेश-174401.
क्षेत्रीय प्रतिनिधि: गौतम सिन्हा, सिक्किम
क्षेत्रीय प्रतिनिधि: आलोक शर्मा 'प्रवीण', सिलीगुड़ी
क्षेत्रीय प्रतिनिधि: डॉ.देवेन्द्र प्रसाद सिंह, सासाराम-821115, बिहार
क्षेत्रीय प्रतिनिधि: डॉ. चेतना राजपूत, डी-II, 44/3, अर्मामेंट कॉलोनी, गणेशखिंड, पुणे-411007
क्षेत्रीय प्रतिनिधि: डॉ. सत्य प्रकाश तिवारी, 83-ए कॉर्नवालिस रोड, ओम रेसिडेंसि, बी.एल.-3, फ्लैट-3ए, कोलकाता-700002
क्षेत्रीय प्रतिनिधि: विक्रम सिंह, उत्तराखंड, मो: 090122-75039
स्वास्थ्य संपादक: डॉ. रंजु नकीपुरिया, नई दिल्ली 7838011230

डिजाईन: कमल प्रसाद बाहाल

- पत्रिका से संबंधित सभी तरह के विवाद सिलीगुड़ी न्यायालय द्वारा ही निपटाये जायेंगे।
- रचनाओं में व्यक्त किये गये विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।

लोकतंत्र के आंगन में मल-पिल्लुओं का चुनावी दंगल और आम आदमी के बुनियादी सवाल!

सत्रहवीं लोकसभा गठन के लिए भारतीय आम चुनाव देश भर में 11 अप्रैल से 19 मई-2019 के बीच कुल सात चरणों में संपन्न कराये जायेंगे। इस आम चुनाव के साथ ही आंध्रप्रदेश,अरुणाचल प्रदेश,उड़ीसा तथा सिक्किम राज्य के विधानसभा चुनाव भी कराये जा रहे हैं। ज़ाहिर है 23 मई को चुनाव परिणाम भी आ जायेंगे और फ़िर केंद्र में नयी सरकार गठन को ले विभिन्न राजनैतिक दलों की अनैतिक सक्रियता हमारे सामने होगी...।

फिलहाल पक्ष-विपक्ष का नापाक़ चुनावी गणित भी सबके सामने है जिसमें आम आदमी के जीवन के मूलभूत सवाल नदारद हैं और झूठे आश्वासन भरे पड़े हैं। जिस लोकतंत्र पर हम अब तक गर्व करते एवं इठलाते रहे हैं तथा महानतम लोकतंत्र के बतौर उसे विश्व-पटल पर पेश करते आ रहे हैं,उसकी दिशा और दशा शायद हमारी नज़रों से ओझल हो चुकी है...।

देश किस ओर जा रहा है,इसे बारीक़ी से समझे बग़ैर ही हम इस चुनावी दंगल में किसी न किसी किरदार की भूमिका निभा रहे हैं। अफ़सोस तो तब होता है जब हमारी बौद्धिक बिरादरी सामने पड़े टुकड़ों के प्रति अपना लोभ संवरण नहीं कर पाती और जीवन-मार्ग की विध्वंसक खाई भी उसके संज्ञान में नहीं होती। ये दोनों ही स्थितियां हमारी बौद्धिकता एवं सामाजिक प्रतिबद्धता के समक्ष सिर्फ़ सवाल ही खड़ा नहीं करती हैं,बल्कि सामाजिक सरोकारों से हमें विछिन्न भी करती हैं।

मनुष्य और पशु के बीच का यह जो अंतर है उसे हमें समझना होगा। पशु वह है जो सामने पड़े टुकड़े के प्रति आकृष्ट तो होता ही है और जीवन-मार्ग के संभावित ख़तरों को भी वह अक्सर नजरअंदाज कर जाता है। वह सिर्फ़ अपने बारे में सोचते हुए वर्तमान में जीता है और वर्तमान को भोगता है।

नये प्रजन्म की चिंताओं से वह सदैव मुक्त रहता है। उसमें अपने समय-समाज और प्रकृति को प्रभावित करने तथा बदलने की क्षमता नहीं होती,जबकि प्रकृत मनुष्य वह है जो अपने जीवन-अनुभवों से हासिल ज्ञान के आलोक में चीज़ों को देखता है,समझता है,उनका विश्लेषण करता है और फ़िर निष्कर्ष पर पहुंचता है। वह जीवन-मार्ग के संभावित ख़तरे को भी बख़ूबी समझता है। उन्हें दूर करने का भरसक प्रयास करता है। संघर्ष करता है। वह वर्तमान में जीता ज़रूर है लेकिन वह भविष्य की चिंताओं से मुक्त नहीं रह सकता। दरअसल यह उसकी संवेदनशीलता का ही एक विस्तार है जो वह सिर्फ़ अपने लिए ही नहीं सोचता है, नये प्रजन्म की बेहतरी की परिकल्पना भी करता है। जीवन-मार्ग के कचरे को साफ़ करते हुए वह अपनी आगे की राह तय करता है। वह अपने समय-समाज व प्रकृति को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। पशु और मनुष्य में सिर्फ़ एक ही समानता है,और वह है उसकी मैथुन क्रिया...।

ज़ाहिर है जो व्यक्ति अपने सामने पड़े टुकड़ों को तो देखता है लेकिन भविष्य के ख़तरों को नजरअंदाज कर जाता है,उसके मनुष्य होने पर संदेह का होना लाज़िमी है।

इस चुनाव के बाद अगर जम्हूरियतपसंद अवाम खुद को ठगा हुआ महसूस करने लगे और हमारी संसदीय राजनीति के जो घातक मल-पिल्लू हैं,वे अपने अपेक्षित विजय पर नंगा होकर हिंसक प्रदर्शन करने लगें और जन-भावनाओं का पदमर्दन करते हुए आनंद-उत्सव में पूरी तरह मशगूल हो जांय,तो इस पर किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए... !

विजय चाहे किसी भी दल का हो,लेकिन इतना तय है कि नये लोकसभा गठन के बाद हमारा लोकतंत्र और अधिक आहत होगा, कमज़ोर होगा। कारण कि सत्ता में भागीदारी तो सिर्फ़ मल-पिल्लुओं की ही होगी ! और जो दल विशेष इस चुनावी-दंगल में एक-दूसरे के खिलाफ़ अपनी नंगी तलवारें भांज रहे हैं,ज़ाहिर है उनमें से अधिकांश सत्ता में अपनी भागीदारी को सुनिश्चित कराने के लिए अपने लंगोट को थोड़ा ढीला करने में ज़रा भी शर्म-संकोच महसूस नहीं करेंगे। दरअसल मल-पिल्लुओं में अपना नैतिकबोध नहीं होता,वे अनायास ही अपनी बिरादरी के साथ हो लेते हैं,जहां उन्हें सुकून मिलता है ! चूंकि स्वच्छता और सुवास उनके अनुकूल नहीं होती,इसलिए उससे उनकी दूरी बनी रहती है।

एक पुरानी कहावत है,'पूत के पांव पलने में...।' और कुपूत के भी...। अनगिनत घपले-घोटालों के महारथी समाजवादी मुलायम ने तो नरेंद्र मोदी को चुनाव पूर्व ही अश्वमेध यज्ञ की तैयारी करने को कह दिया था और अपना आशीर्वाद देकर सीबीआइ के गिरफ्त से बचने का जुगाड़ बैठा लिया। प्रतिदान में राष्ट्रवादी मोदी की सीबीआई ने मुलायम,अखिलेश और प्रतीक के आय से ज्ञात स्त्रोत से अधिक संपत्ति मामले को ठंडे बस्ते में डालकर थोड़ी राहत ज़रूर दे दी है। हालांकि चुनावी दंगल में वह अब भी अपना लंगोट कसते हुए नज़र आ रहे हैं। और बेटा अखिलेश है जो भाजपा को चुनौती दे रहा...। सचमुच बाप-बेटे का यह अभिनव नाटक बेहद दिलचस्प है।

पहले कांग्रेस भी अपने विरोधियों को सीबीआई का भय दिखाया करती थी। आजकल भाजपा सीबीआई का भय थोड़ा ज़्यादा ही दिखा रही है। मानो सीबीआई कोई जांच एजेंसी न होकर पीएमओ का पालतु कुत्ता हो,जब भी मन में आये अपने विरोधियों के पीछे उसे लगा दो। कभी सिर्फ भौंकने के लिए तो कभी डराने के लिए तो कभी काट खाने के लिए...।

बिहार की लालू-जमात के अतिरिक्त विभिन्न दलों के बहुतेरे नेताओं पर भ्रष्टाचार और संगीन अपराध के अनेक मामले दर्ज़ हैं जिनमें भाजपा और जनता दल यूनाइटेड के भी कई बड़े नेता शामिल हैं।

बसपा नेता मायावती पर भ्रष्टाचार के अनेक मामले हैं। कहने को तो वह दलित नेता हैं लेकिन उनकी आर्थिक हैसियत बसपा के हाथी से बड़ी है। बहुचर्चित चारा घोटाला के मुख्य किरदार वह लालू की तरह बेपरवाह नहीं हैं, बल्कि समय की नज़ाकत को खूब समझती हैं। ज़ाहिर है अपनी सुविधा व सुरक्षा के मद्देनजर वह कभी भी किसी की भी गोद में जाकर बैठ सकती हैं। और तृकां सुप्रीमो ममता जो कल तक थर्ड फ्रंट बनाने के लिए पूरा आसमान ही अपने सिर पर उठाये सर्वत्र घूम रही थीं, इन दिनों सुस्त पड़ी हैं। भ्रष्टाचार के मामले में उनके कई कद्दावर नेता जेल जा चुके हैं। हालांकि मुख्यमंत्री का सबसे बड़ा सिपहसालार सारधा घोटाले का मुख्य खलनायक मुकुल राय इन दिनों भाजपा के रथ पर सवार होकर भ्रष्टाचार के खिलाफ़ मोदी-अमित के महान मिशन को आगे बढ़ा रहे और साथ ही चुनावी दंगल में अपनी राष्ट्रभक्ति का सबूत पेश कर

रहे हैं। बेशक भतीजे अभिषेक की आर्थिक हैसियत ममता बनर्जी के मुख्यमंत्री बनने के बाद ही परवान चढ़ी...। तृकां में पहले जो हैसियत मुकुल राय की थी, वह आज अभिषेक की है। पिछले विधान सभा चुनाव में साम्प्रदायिकता और मोदी के 'डीएनए' शब्द को अपना मुख्य चुनावी मुद्दा बनाकर नरेंद्र मोदी और अमित शाह को चुनौती देने वाला शख़्स और कोई नहीं, बल्कि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ही थे जो इस बार राजग का अहम घटक हैं। यह सबको ज्ञात है आज की तारीख़ में भाजपा की बैशाखी के सहारे वह खड़े हैं। और बिहार में लालू-भालू जैसों को पटकनी देने के लिए मोदी को नीतीश के दूषित डीएनए से कोई परहेज नहीं है। राजनीति के इस शातिराना खेल में कब शेर बकरी बन जाय, और कब बकरी शेर, यह कहना मुश्किल है। भाजपा अध्यक्ष अमित शाह और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अक्सर सारधा-नारदा को लेकर ममता बनर्जी को सीबीआई का भय दिखाते रहते हैं...। कभी -कभार ममता बनर्जी भी नरेंद्र मोदी और अमित शाह को उनके भ्रष्टाचार को गिनाते रहती हैं। लेकिन राफ़ेल पर उनकी चुप्पी अकारण नहीं है। भाजपा के खिलाफ़ अपनी राजनैतिक जंग को थोड़ा विराम देते हुए वह इन दिनों खुद को धर्मपरायण बताते हुए पीएम मोदी और अमित शाह को अपने साथ मंत्रोच्चार करने की चुनौती दे रही हैं। और राहुल गांधी मंदिर-मंदिर भटक रहे हैं। साथ ही झूठे आश्वासनों की झड़ी लगा रहे हैं। सचमुच कितना दिलचस्प है यह चुनावी मुकाबला! कांग्रेस की सोनिया हों या राहुल गांधी भ्रष्टाचार का राक्षस उन्हें भी घेर रखा है। एक विश्वस्त रिपोर्ट के मुताबिक स्विस बैंक में कांग्रेस राज में 41 हजार करोड़ की राशि जमा हुई और मोदी के शासन में इसमें 50 फीसदी का इजाफा हुआ। एक चोर दूसरे चोर को पकड़ना चाहता है। एक चोर दूसरे चोर का पीछा कर रहा...! आप निश्चंत रहें,एक चोर दूसरे चोर को कभी नहीं पकड़ता है। दरअसल चोर को पकड़ने का काम जनता को ही करना पड़ेगा। वास्तव में भाजपा और कांग्रेस यह चाहते हैं कि देश में सिर्फ़ दो ही दल वजूद में रहें। एक कांग्रेस और दूसरा भाजपा ताकि मिल-बांट कर खाने में उन्हें सहूलियत हो। देश के संसदीय लोकतंत्र को ये उसी तरफ़ ले जाना चाहते हैं।

परस्पर विरोधी दलों के बीच एक अदृश्य-अघोषित समझौता है जिसे सामान्य जन के लिए समझना बेहद दुस्कर है। या कुछ लोग समझकर भी नहीं समझना चाहते हैं।

नीतिहीन राजनीति में सब कुछ संभव है। सपा के साथ जब बसपा जा सकती है तो फ़िर भाजपा के साथ क्यों नहीं! बसपा की मायावती सत्ता में अपनी मजबूत भागीदारी सुनिश्चित कराने को ले वह किसी के साथ जा सकती हैं।

अगर आप मुनासिब समझें तो ज़रा भी विलंब किये बग़ैर अपनी आंखों की पट्टी को उतार दें तो तस्वीर ज़्यादा साफ़ हो जायेगी। अब भी वक़्त है,संभावित ख़तरे के मद्देनजर आप सतर्क हो जांय या फिर मल-पिल्लुओं की क़तार में खड़े होकर अपने लिए टुकड़ों का जुगाड़ करें! ख़ैर,आपकी मर्जी!!

बहरहाल इस बार का चुनाव पिछले सभी चुनावों से भिन्न है। कारण कि हमारा लोकतंत्र अपनी अंतिम सांसें गिन रहा है। और झूठ पूरी शिद्दत से अपनी शक्ल बदल कर खुद को सच साबित करने पर अड़ा हुआ है। सच डरा-सहमा बगलें झांक रहा है। सर्वत्र झूठ का जय-जयकार हो रहा...!

मोदी के पिछले पांच साल के शासन में अनेक घपले-घोटाले हुए। एक आरटीआई के जवाब में रिजर्व बैंक ने जो सूचना दी है, उसके मुताबिक गत 5 वर्षों में देश के विभिन्न बैंकों में 1 लाख करोड़ के बैंक घोटाले हुए हैं। देश के केंद्रीय बैंक के अनुसार अप्रैल 2017 से मार्च 2018 के बीच बैंक धोखाधड़ी के 5152 मामले उजागर हुए हैं। धोखाधड़ी के इन मामलों में 28459 करोड़ रुपये शामिल हैं। इन मामलों में नीरव मोदी और मेहुल चोकसी का भी मामला शामिल है। राफ़ेल सौदा भी मोदी सरकार पर एक कलंक है। संबंधित तीन अधिकारियों के सामने आये डिसेंट नोट से सौदे में हुई अनियमितता एवं भ्रष्टाचार के आरोप पुष्ट होते हैं। सुप्रीम कोर्ट में सरकार द्वारा दायर हलफनामें में तथ्यों को छुपाने की हर बार जानबूझ कर शैतानी शरारत की गयी। अगर कहीं कुछ गड़बड नहीं हुई है तो सरकार क्यों बार-बार तथ्यों को छुपा रही है और झूठ पर झूठ बोले जा रही है! दरअसल राफ़ेल लड़ाकू विमान सौदा देश का सबसे बड़ा रक्षा-घोटाला है। इस संबंध में फ्रांस के पूर्व राष्ट्रपति फ्रांस्वा ओलांद का बयान जिसे खुद फ्रांसीसी मीडिया ने जारी किया था, के मुताबिक भारत सरकार ने 58 हजार करोड़ रुपये के राफ़ेल विमान सौदे में फ्रांस की विमान बनाने वाली कंपनी दसाल्ट एविएशन के ऑफसेट साझेदार के तौर पर रिलाएंस डिफेंस का नाम प्रस्तावित किया था। यहां ग़ौर करने वाली बात तो यह है कि फ्रांस्वा ओलांद अभी भी अपने बयान पर कायम हैं और नरेंद्र मोदी झूठ पर झूठ बोले जा रहे हैं। और सबसे चकित करने वाली बात तो यह है कि रक्षामंत्रालय राफ़ेल डील संबधित फाइलों को भी अपने पास सुरक्षित न रख सका। उक्त महत्वपूर्ण फाइलें क्या सचमुच चोरी हुईं या इरादतन उन्हें गायब करवा दी गयीं? ज़ाहिर है दोनों ही सूरत में इसके लिए देश के रक्षा एवं प्रधानमंत्री जिम्मेवार हैं। हम इसे ही कहते हैं चोर की दाढ़ी में तिनका।

मोदी की नोटबंदी भी देश का एक और बड़ा घोटाला है। इससे देश की अर्थनीति को भारी नुकसान हुआ। दरअसल नोटबंदी सरकार की एक शातिराना चाल थी जिसके द्वारा उसने बड़े औद्योगिक घरानों को तो लाभ पहुंचाया ही और अपने अवैध धन को वैध बनाया। मोदी ने देश से कहा था कि नोटबंदी से आतंकवाद पर रोक लगेगी तथा कालाधन और भ्रष्टाचार ख़त्म होगा। जबकि ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। विमुद्रीकरण को लेकर प्रधानमंत्री ने भारतीय रिजर्वबैंक के तत्कालीन गवर्नर रघुराम राजन से सलाह तक लेने की ज़रूरत महसूस नहीं की। बैंकों से अपने रुपये निकालने को लेकर क़तार में खड़े-खड़े लगभग दो सौ लोगों की मौत हुई। लाखों लोगों को पुलिस के लात-घूँसे और लाठियों के प्रहार सहने पड़े। सैकड़ों युवतियों का विवाह इसलिए न हो सका कि समय पर बैंकों ने उनके रखे रुपये नहीं दिये। दर्जनों युवतियों ने लोक-लज्जा से मर्माहत होकर आत्महत्या जैसे कदम उठाये। बैंकों से रुपये न निकाल पाने की वज़ह से हजारों रोगियों का समय पर उपचार न हो सका जिसके उनकी मृत्यु हुई। नोटबंदी के चलते लाखों कारखाने बंद हो गये और लगभग 2 करोड़ लोगों की नौकरी चली गयी। जिन्होंने अपने राजनैतिक फायदे के लिए इतना बड़ा अनर्थ किया, उन्हें हम क्या कहें-देशभक्त या देशद्रोही?

नरेंद्र मोदी ने सत्ता पर काबिज होने के बाद एक-एक कर संवैधानिक संस्थाओं पर चोट पहुंचाई। उनकी स्वायतता को ख़त्म किया। मोदी राज में दिल्ली की सड़कों पर सरेआम संविधान की प्रतियां जलायी गयीं। और गांधी के हत्यारे महान बनाया गया। भाजपा का फर्जी राष्ट्रप्रेम आज नग्न होकर अपना प्रदर्शन कर रहा।

इस चुनाव के बाद का एक दृश्य जो हम देश के धृतराष्ट्रों को दिखाना चाह रहे हैं,वह बेहद वीभत्स व डरावना है। नरेंद्रमोदी के कई साल के शासन में तीन हजार से अधिक साम्प्रदायिक हिंसा की घटनाएं हुईं जिनमें लगभग पांच सौ लोग मारे गये। मोदी की नस्लीय राजनीति ने पूरे देश का राजनैतिक माहौल ख़राब कर रखा है। देश विकास की ओर नहीं, बल्कि विनाश की ओर जा रहा है। और सबसे चिंता की बात तो यह है कि पड़ोसी मुल्क़ों से हमारे संबध बेहद ख़राब होते जा रहे हैं। मोदी सरकार अपनी सुनियोजित साजिश के तहत भारतीय लोकतंत्र और संविधान

की निजता को ख़त्म करना चाहती है। जल,जंगल,जमीन और पहाड़ कुछ भी सुरक्षित नहीं है। सब कुछ मोदी अपने चहेते उद्योगपतियों के हवाले करते जा रहे हैं। बड़े आर्थिक अपराधियों को चौकीदार देश से भगा रहा और फ़र्जी हिन्दुत्व व राष्ट्रवाद का नारा उछाल कर वह आम-अवाम को भ्रष्टाचार व जीवन के मूलभूत सवालों से भटका रहा है। सरकार के सृजित नस्लीय विभेद व धर्म-उन्माद के वीभत्स परिणाम हमारे सामने हैं। सरकार के ख़िलाफ़ अगर कोई सवाल करता है तो उसे तुरंत देशद्रोही घोषित कर दिया जाता है। जबकि केंद्र सरकार के अधिकतर फैसले देश के खिलाफ़ जाते हैं।

जो खुद ही देश के खिलाफ़ काम कर रहा है, वह दूसरों को देशद्रोही साबित करना चाहता है। सत्ता की बर्बरता व शरारत के खिलाफ़ आवाज़ उठाने के कारण अनेक जनपक्षधर सृजनकर्मियों और पत्रकारों की हत्या हो चुकी है। कइयों को जेलबंदी बनाकर रखा गया है। भाजपा शासन ने देश को आज एक खतरनाक मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया है। संविधान और लोकतंत्र को बचाने के लिए,मोदी की धोखाधड़ी, दमनतंत्र व लूटतंत्र से मेहनतकश अवाम को निजात दिलाने के लिए देश के युवासमाज को मुखर होना होगा। बौद्धिक जगत को भी अपने वैचारिक विभ्रम से बाहर निकल कर सामाजिक परिवर्तन के लिए आगे आना होगा। राजनीति के मल-पिल्लुओं के खिलाफ आवाज़ उठानी होगी। देश में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए अपने ज़िन्दा होने का सबूत पेश करना होगा। और इसके लिए ज़रूरी है कि हम नस्लीय सत्ता-सियासत की क़ब्रें अभी से खोदना आरम्भ कर दें। बेशक यह आम चुनाव से भी एक बड़ी जंग है।

क्या हमने इस बात पर ग़ौर किया है कि इस बार का चुनावी मुद्दा क्या है! शायद नहीं, मुद्दाविहीन राजनीति देश को रसातल में ले जाने के लिए काफ़ी है। आज देश की सबसे बड़ी समस्या क्या है? महंगाई, बेरोजगारी, साम्प्रदायिक उन्माद और नस्लीय हिंसा या क्या, आतंकवाद से छोटी समस्या हैं? जीवन में बढ़ती अनिश्चयता और युवकों में तेजी से विकसित होता अवसाद क्या देश की छोटी समस्या है? आये दिन किसानों की आत्महत्याएं क्या कोई समस्या नहीं है? देश की प्राकृतिक संपदाओं की बेतहासा लूट, बढ़ती आबादी और पर्यावरण प्रदूषण क्या समस्या नहीं हैं? निश्चित तौर पर ये सभी समस्याएं आतंकवाद से भी बड़ी और भयावह हैं। हमारा सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि राजनीति के मल-पिल्लू और लंपट पूंजी की बुनियाद पर खड़ा आज का मीडिया हमें जो दिखा और समझा रहा है, हम उससे आगे न तो देखना चाहते हैं न समझना। अराजकता, लंपटता और भ्रष्टाचार जब राजनीति में पूरी तरह घुलमिल कर एकाकार हो जाते हैं तब मल-पिल्लू पैदा होते हैं। हमारे पास अब भी वक़्त है, अगर हम तन कर सच के साथ खड़े हो जायें तो यह संभव है कि मल-पिल्लुओं से हम अपने लोकतंत्र को बचा सकते हैं। अगर देश में लोकतंत्र नहीं बचा तो इसके भयावह परिणाम के लिए आप अभी से तैयार हो लें ... ! देश को टूटने से हम नहीं बचा सकेंगे।

भले आप के लिए यह सत्रहवीं लोकसभा निर्वाचन कोई ख़ास महत्व रखता हो लेकिन मेरे लिए यह कतई अहम नहीं है कि केंद्र अथवा जिन राज्यों में चुनाव हो रहे हैं,वहां सत्ता पर कौन काबिज़ होगा! या किन-किन दलों के सहयोग से सरकार बनेगी! दरअसल हमारी चिंता भारतीय राजनीति के घातक मल-पिल्लुओं को लेकर है जो जम्हूरियत की प्रकृत अस्मिता पर हर पल वार कर रहे और उसे तार-तार करने में लगे हुए हैं। हमारी चिंता में देश का वह प्रचारतंत्र भी शामिल है जो अल्पजीवी मल-पिल्लुओं के ग़लीज़ व मानवघाती कृत्यों को अधिक चमकदार बनाने को ले इस भ्रष्ट व्यवस्था की साजिश का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है। हम इस भ्रष्ट संसदीय लोकतंत्र की खर्चीली धोखाधड़ी एवं दमनतंत्र के खिलाफ़ इंसाफ़पसंद अवाम को उठ खड़े होने का आह्वान करते हैं।

विश्व सर्वहारा साहित्य के प्रणेता महान साहित्यकार मक्सिम गोर्की का मानना था कि हर उस आदमी को जो सच्चे मन से यक़ीन करता है कि स्वतंत्रता, सुन्दरता, और तर्कसंगत जीवन जीने की मानवजाति की आकांक्षा बेकार का सपना नहीं, बल्कि वह असली ताक़त है जो जीवन के नये-नये रूपों का सृजन कर सकती है,एक ऐसा उत्तोलन है जो पूरी दुनिया को उठा सकता है। गोर्की की इसी उक्ति के साथ हम अपनी बात को विराम देते हैं।

राजेंद्र प्रसाद सिंह

20/03/2019

लोकमत

'आपका तिस्ता-हिमालय' के अंक नित्य मिल रहे हैं, और हम प्रत्येक अंक से नई ऊर्जा के साथ लाभान्वित भी रहे हैं। आपको कोटि-कोटि साधुवाद। आपका काव्य संकलन 'वक़्त का आईना' पर मैंने एक शोध परक आलेख लिखा था जो छपकर आ चुका है। यह शोध-आलेख अंतरराष्ट्रीय शोध-पत्रिका(शोध संविद,पटना) में प्रकाशित हुई है। मैं इसकी एक प्रति आभार सहित आपको प्रेषित कर रहा हूं। पत्रिका की सदस्यता भी मेरी समाप्त हो चुकी है। मैं अतिशीघ्र पुनः पत्रिका की सदस्यता ग्रहण कर आपको सूचित करूंगा।आप उत्तरबंग में निरंतर क्रियाशील हैं। आपकी सृजनशीलता से हमें प्रेरणा मिलती है। आपके कर्मठ जीवन के लिए पुनः साधुवाद।

साथ ही हाइकु (कविता) एवं एक अन्य कविता भी प्रेषित कर रहा हूं। आशा करता हूं कि आप इसे यथा समय अपनी पत्रिका में स्थान देंगे। दो तरह की कविताओं को दो अंक में अलग-अलग यथा समय स्थान देंगे यह आशा करता हूं।

-डॉ. जगमोहन सिंह
काज़ी नजरूल विश्वविद्यालय, सिअरसोल राजबाड़ी,
सिअरसोल, पो. पश्चिम बर्द्धमान-713358

आपकी पत्रिका 'आपका तिस्ता-हिमालय' का दिसम्बर 2017 अंक दो दिन पहले प्राप्त हुआ। धन्यवाद। अंक काफी ठीक लगा। इसमें आपका संपादकीय बहुत अच्छा लगा। आपने गौरी लंकेश की हत्या के बहाने व्यवस्था और सत्ता को कटघरे में खड़ा करने का जो प्रयास किया है, वह निश्चित रूप से गौरतलब है। इसके अलावा पुष्पराज का सच्चा सौदा डेरा के संबंध में जो लेख प्रकाशित किया है आपने, वह भी अच्छा लगा। इस प्रकार के लेखों को प्रकाशित करना जरूरी है, जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग सच्चाई से रू-ब-रू हों। 'ढोंग-पाखंड की जय-जयकार' तथा 'वे छोड़ गये हैं अपने पीछे एक सुगंधित एहसास' और 'क्या बोली का जवाब गोली है?' जैसे लेख इस अंक को यादगार बनाते हैं, इसमें संदेह नहीं। अन्य लेख, कहानी, कविताएं भी पठनीय लगे।

-रामनिहाल गुंजन
नया शीतल टोला, आरा-802301, बिहार